International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 04(III), October - December, 2025, pp. 136-144

प्राचीन व्यापार से लेकर वर्तमान भारत सरकार की आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया पहलः एक समग्र अध्ययन

सुमन*

सहायक आचार्य, (इतिहास), एस. बी डी.राजकीय महाविद्यालय, सरदारशहर।

*Corresponding Author: sumanburdak39@gmail.com

Citation: सुमन. (2025). प्राचीन व्यापार से लेकर वर्तमान भारत सरकार की आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया पहलः एक समग्र अध्ययन. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(04(III)), 136–144.

सार

यह शोध–पत्र भारत के व्यापारिक इतिहास की यात्रा को प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक समेटे हुए है। भारत, जिसे कभी "सोनें की चिड़िया" कहा जाता था, प्राचीन समय से ही मसालों, वस्त्रों, धातुओं और रत्नों के व्यापार के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध रहा है। वैदिक युग से लेकर मध्यकाल तक भारत के व्यापारी स्थल और समुद्री दोनों मार्गों से व्यापार करते रहे, जिससे न केवल आर्थिक समृद्धि बढ़ी बल्कि सांस्कृतिक आदान–प्रदान भी हुआ। 16वीं से 19वीं शताब्दी के बीच यूरोपीय शक्तियों पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी और अंग्रेज़ों के आगमन ने भारत के व्यापारिक ढांचे को गहराई से प्रभावित किया। ब्रिटिश उपनिवेशवाद के दौरान भारत को कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता बना दिया गया, जिससे उसकी स्वदेशी उद्योग व्यवस्था को भारी आघात पहुँचा। स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने आत्मनिर्भरता की राह पकड़ी और 21वीं सदी में "आत्मनिर्भर भारत" तथा "मेक इन इंडिया" जैसी योजनाओं ने इस दिशा में नई ऊर्जा भर दी। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत सरकार ने लगभग ₹20 लाख करोड़ का प्रोत्साहन पैकेज दिया, जिससे कृषि, उद्योग और डैडम् क्षेत्र को बल मिला। वहीं, "मेक इन इंडिया" पहल से विदेशी निवेश ;थ्क्ष्द्ध में अभूतपूर्व वृद्धि हुई और भारत विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरा। यह अध्ययन दर्शाता है कि भारत की आर्थिक आत्मनिर्भरता कोई नई अवधारणा नहीं है, बल्कि उसकी प्राचीन व्यापारिक परंपरा का ही आधुनिक स्वरूप है। यदि देश इसी दिशा में अग्रसर रहा, तो वह पुनः वैश्विक व्यापार का नेतृत्वकर्ता बन सकता है।

शब्दकोशः *भारत का व्यापार, प्राचीन भारत, आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इंडिया, आर्थिक विकास, स्वदेशी उद्योग, औद्योगिक प्रगति, वैश्विक बाजार, उत्पादन, रोजगार, निवेश।*

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही भारत व्यापारिक दृष्टि से समृद्ध और सक्षम रहा है। अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों के कारण यहाँ विभिन्न उद्योगों और व्यवसायों का विकास हुआ। सिंधु सभ्यता के समय में ही संगठित और सुव्यवस्थित व्यापार प्रणाली स्थापित हो चुकी थी। उस काल में नगर योजनाबद्ध ढंग से बनाए गए थे तथा सड़कों के साथ–साथ जल मार्गों का भी व्यापार के लिए प्रयोग किया जाता था।

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

मौर्य काल में उद्योग, निर्माण और व्यापारदृवाणिज्य का और अधिक विस्तार हुआ। भारत से वस्त्र, मिट्टी के बर्तन, धातु एवं बहुमूल्य पत्थरों का निर्यात किया जाता था, जबकि सोना और अन्य बहुमूल्य धातुएँ आयात की जाती थीं। इस काल में भारत विश्व के प्रमुख व्यापारिक केंद्रों में से एक बन गया था।

भारत की भौगोलिक स्थिति के कारण यह स्थल और जल दोनों मार्गों से विश्व के विभिन्न देशों से जुड़ा हुआ था। इसी वजह से भारत ने प्राचीन काल में विश्व व्यापार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

किन्तु विदेशी शक्तियों, विशेषकर यूरोपीय उपनिवेशवादियों के आगमन के बाद भारत के व्यापार को गहरी क्षति पहुँची। ब्रिटिश शासन ने भारत के पारंपरिक व्यापार को प्रभावित किया और भारत को कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता बना दिया।

1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने पुनः अपने व्यापार और उद्योग को सशक्त बनाने के लिए योजनाबद्ध प्रयास किए। आज भारत 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक इन इंडिया' जैसी योजनाओं के माध्यम से अपने ऐतिहासिक गौरव को पुनः स्थापित करने की दिशा में अग्रसर है। इन योजनाओं का उद्देश्य भारत को विश्व मंच पर एक स्वावलंबी और मजबूत आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित करना है।

प्राचीन भारत में व्यापार

किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसके व्यापार पर निर्भर करती है। भारत प्राचीन काल से ही इस क्षेत्र में उन्नत अवस्था में था। भारत की भौगोलिक स्थिति एवं प्राकृतिक साधनों की बहुल्यता ने इसमें अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। व्यापार वाणिज्य श्रेणियां के रूप में संगठित था।साथ ही स्थानीय शासको ने व्यापारियों को प्रोत्साहित किया जिसके कारण व्यापारव वाणिज्य में भूतपूर्व उन्नति हुई। प्राचीन काल में सिंधु सभ्यता के सभी स्थलों से एक जैसी वस्तुओं की प्राप्ति से यह सिद्ध होता है कि यह क्षेत्र मार्गो द्वारा जुड़े हुए थे और इनमें परस्पर व्यापार होता था। साथ ही सैन्धव लोगों का विदेशी व्यापार भी उन्नत अवस्था में था जो स्थल एवं जलमार्गों द्वारा अफगानिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, ईरान, मिस्र, बहरीन, मेसोपोटामिया आदि देशों के साथ होता था।

सुमेरियन अभिलेखों में जिन आयातित वस्तुओं की सूची मिलती है वे सैन्धव स्थलों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थी। निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में विभिन्न प्रकार के कीमती पत्थर एवं हाथी दांत का सामान मुख्य था। लोथल से गोल मुद्रा मिली है जो बहरीन की मुद्रा के समान है । ईरान के सुसा नगर से वर्गाकार मोहरे, बाट, हाथी दांत की वस्तुएं, शतरंज के गोटे एवं तामड़ा के मनके मिले हैं जबकि लोथल से सुसा प्रकार के गोलाकार तांबे के में पिंड प्राप्त हुए है। भारत और मिस्र से प्राप्त वस्तुओं में अनेक प्रतीक समान रूप से प्रयोग में लाए गए हैं। उत्तरी सीरिया के रास–समरा से हाथ दांत की एक छड़ प्राप्त हुई है जो भारत सीरिया व्यापार का संकेत देती है।

6वीं शताब्दी ईसा पूर्व में भारत के पश्चिम उत्तर भाग पर ईरानियों का प्रभुत्व स्थापित होने के परिणाम स्वरूप अब आवागमन के अनेक नये मार्ग खुल गए एवं इन मार्गों के विकास पर पर्याप्त ध्यान दिया गया एवं सभी प्रमुख नगरों एवं व्यापारिक केन्द्रों को आपस में जोड़ दिया गया।

इस समय सर्वाधिक महत्वपूर्ण मार्ग उत्तरापथ था जो उत्तरी भारत से होकर गंधार,बैक्ट्रिया तक जाता था तथा वहाँ से कैस्पियन सागर तथा कला सागर होते हुए पूर्वी यूरोप तक जाता था। इस रास्ते पर ताम्रलिप्ति, पाटलिपुत्र, प्रयाग, काशी, कन्नौज, मथुरा, हस्तिनापुर, तक्षशिला, पुशकलावती आदि नगर पड़ते थे। बौद्ध साहित्य में भी व्यापारिक मार्गों की जानकारी मिलती है। मुख्यतः व्यापारी लूटपात से बचने के लिए बड़े–बड़े काफिले बनाकर एक साथ व्यापारिक यात्रा किया करते थे। इन काफिलों को सार्थ कहा जाता था।

ईरानी सम्राट डेरियस के सेनापति स्काईलेक्स लाल सागर होते हुए अरब सागर पार कर सिंधु नदी के माध्यम से भारत पहुंचने का सीधा जल मार्ग खोजने में सफल रहा। बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार इस समय भारत के पश्चिमी एवं पूर्वी देशों के साथ घनिष्ठ व्यापारिक संबंध थे। इस हेतु भारत के पूर्वी एवं पश्चिमी समुद्र तट पर

अनेक प्रसिद्ध बंदरगाह थे जिनमें पूर्वी तट पर ताम्रलिप्ति, कावेरिपत्तिनम एवं पश्चिमी तट पर भृगकच्, सुपारक, सोवीर विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएं वस्त्र, चंदन, चावल, हाथी दांत का सामान, मसाले, रंग, बहुमूल्य रत्न, पक्षी मुख्य थे। इसके बदले में सोना चांदी बड़ी मात्रा में भारत आता था।

लंबे समय के बाद मौर्य काल में सर्वप्रथम राजनीतिक एकता स्थापित हुई और संपूर्ण राष्ट्र एक प्रशासनिक सूत्र में बंध गया। प्रशासनिक एवं सैनिक आवश्यकताओं के फलस्वरुप मार्गो का विकास हुआ एवं उनकी सुरक्षा में वृद्धि हुई। उत्तर पश्चिमी भाग से यूनानियों को खदेड़ने के बाद इस भाग पर मौर्यों का अधिकार हो गया। इसी प्रकार दक्षिणी–पश्चिमी एवं पूर्वी– दक्षिणी व्यापारिक मार्ग पर भी उनका नियंत्रण हो गया।

व्यापारियों को यातायात एवं सुरक्षा से संबंधित सुविधाएं राज्य की ओर से प्राप्त होती थी। आंतरिक एवं विदेशी दोनों ही व्यापार उन्नत अवस्था में था। इस समय सीरिया मिश्र तथा अन्य पश्चिमी देशों के साथ व्यापार होता था। राज्य को नुकसान पहुंचाने वाली वस्तुओं का आयात नहीं किया जाता था। मिश्र को हाथी दाँत, कछुए, मोती, रंग, सीपियां नील और बहुमूल्य लकड़ी निर्यात की जाती थी। निर्यात की जाने वाली वस्तुओं पर 4þ एवं आयातित वस्तुओं पर 10þ कर लिया जाता था।

इस समय पश्चिमी समुद्र तट पर स्थित मुजरिस बंदरगाह से भारतीय व्यापारी फारस की खाड़ी में जाया करते थे जहाँ मस्कट बंदरगाह भारतीय माल का प्रमुख केंद्र था। यहाँ से भारतीय सामान पश्चिमी देशों में भेजा जाता था। मिश्र से व्यापार लाल सागर के जल मार्ग द्वारा होता था। चीन से विशेषतः रेशम का आयात किया जाता था। रेशम के अलावा मोती ऊन कपड़े ,मानिक नीलम, मूंगा एवं सुगंधित द्रव्यों का आयात किया जाता था। मलेशिया जावा सुमात्रा से चंदन की अनेक किस्म का आयात किया जाता था तथा मलेशिया चीन एवं जावा से अगर की लकड़ी का आयात होता था।

मौर्योत्तर काल में राजनीतिक विघटन से व्यापार पर राज्य का नियंत्रण समाप्त हो गया परिणामस्वरूप स्वतंत्र व्यापारिक श्रेणियों का विकास हुआ। इस समय एक ही स्थान पर बैठकर माल बेचने वाले व्यापारी 'वाणिक' कहलाते थे। जबकि एक स्थान से दूसरे स्थान पर माल लाने ले जाने वाले व्यापारियों को सार्थ कहा जाता था। इस समय व्यापारिक मार्गों, बंदरगाहों एवं व्यापारिक केन्द्रों का बहुत अधिक विकास हुआ। वाराणसी, वैशाली, ताम्रलिप्ति, पाटल, बर्बरीक, भृगकच्छ, शुर्पारक, कल्याण, प्रतिष्ठान,तोसली, मछलीपट्टनम, उरैयूर, कावेरीपट्टनम, अरिकमेण्डु, मुजरिम, महत्वपूर्ण व्यापारीक केंद्र एवं बंदरगाह थे। पतंजलि ने अनेक व्यापारिक वस्तुओं का उल्लेख किया है जिसका क्रय–विक्रय होता था। काशी इस समय रेसमी वस्त्रों का प्रसिद्ध केंद्र था। तम्रलिप्ती उच्च कोटि के मलमल के लिए प्रसिद्ध था। मदुरा काली मिर्च हुए अन्य मसाले के व्यापार का बड़ा केंद्र था। शिल्पादीकारम के अनुसार मदुरा में काली मिर्च से भरे बोरों के ढेर लगे रहते थे। केरल के बाजार कीमती पारदर्शी पत्थरों, हीरो एवं विभिन्न प्रकार के नीलम के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था। तोसली हाथी दाँत उद्योग एवं व्यापार का मुख्य केंद्र था। इस काल में बैक्ट्रिया भारत, चीन, मध्य एशिया और भूमध्य सागरीय देशों के बीच आयात– निर्यात का महत्वपूर्ण केंद्र था। इसी समय हिप्पालस नामक नाविक ने 45 ईस्वी में मानसूनी हवाओं के माध्यम से भारत पहुँचने के छोटे मार्ग का पता लगाया जिससे रोम के साथ समुद्री व्यापार को प्रोत्साहन मिला तथा भारतीय व्यापार पर से अरबों का एकाधिकार समाप्त हो गया। व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में था। निर्यात की तुलना में आयात बहुत कम होता था। रोमन साम्राज्य से बड़ी मात्रा में सोना आता था जो अधिकतर मुद्रा के रूप में होता था जिसका उल्लेख तमिल ग्रंथ एवं प्लिनी करते हैं।

गुप्त काल में शांति एवं सुदृढ शासन व्यवस्था के कारण व्यापारिक मार्ग अपेक्षाकृत अधिक सुगम एवं सुरक्षित हो गए। फाह्यान के यात्रा विवरण से पता चलता है कि मार्ग में उसे कहीं भी किसी प्रकार से चोर डाकू का सामना नहीं हुआ एवं कालिदास के रघुवंश से मार्गों की सुरक्षा के बारे में जानकारी मिलती है। इस समय पोत निर्माण कला चरम पर थी। व्यापार विनिमय की सुविधा के निमित्त गुप्तों ने अपने सिक्कों को रोमन

माप–तोल पर तैयार करवाया था। पूर्वी देशों से प्राप्त वस्तुएँ तथा भारत के विभिन्न प्रदेशों की प्रसिद्ध वस्तुएं इकट्ठा कर भड़ौच भेजा जाता था और वहां से पश्चिमी देशों में भेजा जाता था। चीन के उच्च गुणवत्ता वाले रेशम की भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी बड़ी मांग थी। रोमन साम्राज्य में चीन का माल भारत होकर जाता था। चीनी व्यापारी भारत के पूर्वी बंदरगाहों तक माल पहुंचाने थे जहाँ से रोमन व्यापारी या भारतीय व्यापारी उसे रोम पहुँचते थे।

मध्यकाल में व्यापार

सल्तनत काल में भारत में व्यापारी वर्ग को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था क्योंकि व्यापारी वर्ग न केवल देश–विदेश से विभिन्न वस्तुएं लाते थे अपितु विभिन्न देशों के समाचार भी लाया करते थे। देश के सभी बड़े–बड़े नगर, शहर, गांव एवं स्थल एवं जलमार्गों द्वारा परस्पर जुड़े हुए थे। मार्गों के सुरक्षा एवं व्यापारियों की सुविधा के लिए शासक वर्ग स्थान–स्थान पर सराय व तालाब बनवाते थे तथा मार्गों के किनारे छायादार वृक्ष लगाते थे। अधिकांशतः खाड़ी देशों में व्यापार गुजरात के बंदरगाहो द्वारा अरब सागर के रास्ते होता था। गुजरात के बंदरगाहों से हिंद महासागर होते हुए दक्षिणी पश्चिमी एशिया के देशों– लंका, मलाया, जावा, बर्मा, जापान एवं चीन में भारतीय माल ले जाया करते थे। लाहौर, मुल्तान, थट्टा, उच्छ, दिल्ली, बोड़ा, अहमदाबाद, सोमनाथ, खंभात, पाटन, धार, देवगिरी, सतगांव, ढाका, सोनरगांव, चिटगांव आदि प्रमुख नगरों का विकास हुआ।

लोहा, हथियार, सूती वस्त्र, शक्कर, नील, मसाले, जड़ी–बूटियां, हीरे, चंदन, लाल मोती, पान, सुपारी आदि का निर्यात विभिन्न देशों को किया जाता था।

15वीं शताब्दी में भारतीय समुद्री व्यापार मुख्यतः गुजराती मुस्लिम व्यापारियों के हाथों में था। इस समय यह मल्लका का अंतरराष्ट्रीय बंदरगाह बन गया जहां पर भारत, चीन एवं जावा के व्यापारी परस्पर माल खरीदते थे। भारतीय जहाज नियमित रूप से फारस की खाड़ी एवं लाल सागर द्वारा व्यापार करते थे। लेकिन अरब सागर के व्यापार पर अरबी जहाज मालिकों का आधिपत्य था। मुगलों ने एक विशाल क्षेत्र में शांति एवं व्यवस्था की स्थिति कायम कर दी थी जिससे व्यावसायिक क्रियाकलापों को प्रोत्साहन मिला शासक वर्ग व्यापारियों के मामले में हस्तक्षेप नहीं करता था। व्यापारी वर्ग स्वतंत्र रूप से व्यापार करते थे। जिससे उनमें तीव्र प्रतिस्पर्धा का वातावरण बना रहता था। 15वीं शताब्दी की सामुद्रिक खोजों से भारत एवं पश्चिमी देशों के मध्य सीधे व्यापारिक संबंध स्थापित हो गये जिससे पुरानी व्यापार पद्धति में परिवर्तन पैदा हो गए। पुर्तगालियों ने भारतीय क्षेत्रों में किलेबंदी आरंभ कर दी। इसके साथ ही पूर्वी–समुद्र तटों पर भी अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। 16वीं शताब्दी के अंत तक डच एवं अंग्रेज व्यापारी भी इस स्पर्धा में शामिल हो गए। 17वीं शताब्दी में साम्राज्य के अनेक भागों में एक विकसित बाजार व्यवस्था थी। ब्याज एवं ऋण आदि की सुविधा विद्यमान थी। ऋण व्यवस्था में हुण्डी का प्रयोग होता था। इस समय आगरा, ढाका, दिल्ली, लाहौर, अहमदाबाद आदि नगरों का तेजी से विकास हुआ। मुद्रा ढालने का कार्य मुगलों द्वारा नियंत्रित टकसालों के द्वारा किया जाता था। अबुल फजल के विवरणानुसार इस समय तांबे के सिक्के ढालने की 42 टकसाल थी। चांदी का रुपया ढालने की 14 एवं सोने की मोहर ढालने की 4 टकसालें थी।

लगभग एक शताब्दी तक व्यापारिक लाभ का उपभोग करने के बाद अंग्रेज, डच एवं फ्रांसीसी पुर्तगालियों से आगे निकल गए। 17वीं शताब्दी के आरंभ में यूरोप में व्यापारिक कंपनियों का जन्म हुआ। अंत में अंग्रेज भारतीय सामुद्रिक व्यापार पर स्वामित्व हासिल करने और राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करने में सफल हुए। यूरोपीय शक्तियों ने भारतीय मसालों के साथ–साथ वस्त्रों को भी यूरोपीय बाजार में पहुंचाया। अंग्रेजों ने सूरत, भड़ौच, अहमदाबाद, मुस्लिपटनम में अपनी फैक्ट्रियां स्थापित कर ली। 1639 में मद्रास अंग्रेजों के हाथों में आ गया। डचों द्वारा मुंबई ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया गया एवं 1696 से 99 में कोलकाता की किलेबंदी से अंग्रेजों की स्थिति मजबूत हो गई।

औपनिवेशिक काल में व्यापार

18वीं शताब्दी में केंद्रीय शासनक की दुर्बलता का लाभ उठाकर अंग्रेजों ने अपने आर्थिक हितों को मजबूत बना लिया 16वीं 17वीं शताब्दी में भारत लगभग पूरे विश्व को पहनने के लिए वस्त्र उपलब्ध करवा रहा था। लेकिन धीरे–धीरे अंग्रेजों ने भारतीय कपड़ा उद्योग को समाप्त कर हाथ से बने कैलिको कपड़े पर 85þ एवं मलमल पर 44þ तक निर्यात कर लगा दिया। जबकि ब्रिटेन से आयात होने वाले कपड़े पर भारत में 5þ ही आयात कर लगाया गया। इतना ही नहीं कंपनी ने योजना बद ढंग से भारतीय उद्योगों को नष्ट कर दिया। परिणाम स्वरुप सन 1800 से 1860 के बीच में भारतीय कपड़े का निर्यात 98þ तक कम हो गया एवं भारत में कपड़े का आयात 6300þ तक बढ़ गया और जहाँ 17 वीं शताब्दी में विश्व के 27þ वस्त्रों का उत्पादन भारत कर रहा था वहीं 1947 तक आते–आते यह उत्पादन घटकर सिर्फ 2 प्रतिशत रह गया। इसी प्रकार अंग्रेजों ने भारतीय कृषि की विविधता को भी अपने मुनाफे के लिए नष्ट कर दिया।

आत्मनिर्भर भारत अभियान

आत्मनिर्भर भारत अभियान की शुरुआत प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 12 मई 2020 को की गई थी। इसका उद्देश्य भारत को आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी रूप से इतना सशक्त बनाना है कि वह बाहरी संसाधनों पर निर्भर हुए बिना अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर सके। कोविड–19 महामारी के समय जब वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला बाधित हो गई थी, तब इस अभियान की आवश्यकता और भी अधिक महसूस हुई। प्रधानमंत्री ने "लोकल के लिए वोकल" का नारा देकर देशवासियों से स्थानीय उत्पादों के प्रयोग और प्रोत्साहन की अपील की, जिससे भारतीय उद्योगों और उद्यमियों को एक नई दिशा मिली।

आत्मनिर्भर भारत अभियान पाँच प्रमुख स्तंभों पर आधारित है कृ अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढांचा, प्रणाली, जनसांख्यिकी लाभ और मांग। इन पाँचों स्तंभों का उद्देश्य भारत को एक सशक्त राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है। आर्थिक दृष्टि से, सरकार ने विभिन्न क्षेत्रों में निवेश बढ़ाने, उत्पादन को प्रोत्साहित करने और छोटे–मझोले उद्योगों ;डैडमेद्ध को सहायता प्रदान करने के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं। बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में, सड़कों, रेलमार्गों, बंदरगाहों, ऊर्जा और डिजिटल नेटवर्क के विस्तार पर जोर दिया गया है। वहीं प्रणाली को अधिक पारदर्शी और तकनीकी रूप से आधुनिक बनाने के लिए डिजिटल इंडिया और ई–गवर्नेंस को बढ़ावा दिया जा रहा है।

इस अभियान का एक और महत्वपूर्ण पहलू है जनसांख्यिकी लाभ कृ यानी भारत की युवा शक्ति का सही उपयोग। भारत विश्व का सबसे युवा देश है, और आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य है कि इस युवा वर्ग को रोजगार, कौशल विकास और उद्यमिता के अवसर प्रदान किए जाएँ। इसके लिए 'स्टार्टअप इंडिया' और 'स्किल इंडिया' जैसी योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जिससे युवा वर्ग आत्मनिर्भर बन सके। मांग के क्षेत्र में, देश के भीतर उत्पादों की खपत को बढ़ाने और स्थानीय उद्योगों को मजबूत करने पर ध्यान दिया गया है ताकि भारत का व्यापार संतुलन सुधरे और विदेशी निर्भरता कम हो।

आत्मनिर्भर भारत अभियान केवल एक आर्थिक नीति नहीं बल्कि एक जनआंदोलन बन चुका है। यह अभियान प्रत्येक नागरिक को यह प्रेरणा देता है कि वह देश के विकास में अपनी भूमिका निभाए। सरकार ने इसके अंतर्गत ₹20 लाख करोड़ का विशेष आर्थिक पैकेज घोषित किया, जो विभिन्न क्षेत्रों – जैसे कृषि, लघु उद्योग, रोजगार, शिक्षा, और स्वास्थ्य के विकास में सहायक बना। इससे भारत के ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता की भावना को बल मिला।

इस अभियान से "मेक इन इंडिया", "डिजिटल इंडिया", "स्टार्टअप इंडिया" जैसी योजनाओं को नई दिशा मिली है। इन योजनाओं के माध्यम से भारत अब न केवल उपभोक्ता देश बनना चाहता है, बल्कि एक उत्पादक राष्ट्र बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य यह नहीं है कि हम वैश्विक

सहयोग से दूर रहें, बल्कि यह है कि भारत अपनी आंतरिक क्षमताओं को विकसित कर वैश्विक मंच पर आत्मविश्वास के साथ खड़ा हो सके।

अंततः, आत्मनिर्भर भारत अभियान भारत के समग्र विकास की एक मजबूत नींव है। यह अभियान हमें यह सिखाता है कि यदि हर नागरिक अपने स्तर पर आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करे कृ चाहे वह शिक्षा, उद्योग, कृषि या तकनीक के क्षेत्र में हो कृ तो भारत विश्व का अग्रणी राष्ट्र बन सकता है। यह अभियान केवल सरकार की योजना नहीं, बल्कि हर भारतीय की जिम्मेदारी है कि वह "स्थानीय को वैश्विक" बनाए और भारत को आत्मनिर्भरता की नई ऊँचाइयों तक पहुँचाए।

मेक इन इंडिया

मेक इन इंडिया" भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य भारत को एक वैश्विक विनिर्माण ;डंदनबिजनतपदह भ्नइद्ध के रूप में विकसित करना है। इस योजना की घोषणा 25 सितंबर 2014 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा की गई थी। इसका मकसद विदेशी और घरेलू निवेश को प्रोत्साहित करना, रोजगार सृजन बढ़ाना, और देश के औद्योगिक ढांचे को मजबूत बनाना है।

लाभ ;Benefitsद्ध

- भारत को एक विनिर्माण केंद्र के रूप में विकसित करना।
- आर्थिक विकास को बढ़ावा देना।
- बेरोजगारी में कमी लाना और रोजगार के अवसर बढ़ाना।
- अधिक–से–अधिक विदेशी निवेश आकर्षित करने का अवसर।
- भारत में घरेलू निवेश को बढ़ावा देना
- नवाचार ;Innovationद्ध और तकनीकी विकास को प्रोत्साहित करना।

Pillars of Make in India

- New Processes ;नई प्रक्रियाएँद्धः व्यापार को आसान बनाने, लाइसेंस प्रणाली में सुधार और पारदर्शिता बढ़ाने पर ध्यान।
- New Infrastructure ;नया बुनियादी ढांचाद्धः औद्योगिक गलियारों, स्मार्ट शहरों और परिवहन नेटवर्क का विकास।
- New Sectors ;नए क्षेत्रद्धः 25 प्रमुख क्षेत्रों में निवेश के अवसर जैसे– रक्षा, ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, खाद्य प्रसंस्करण आदि।
- New Mindset ;नई सोचद्धः सरकार और नागरिकों के दृष्टिकोण में परिवर्तन, जिससे "सरकार नियंत्रक नहीं, सहयोगी बने।"

नीतिगत रूपरेखा ;Policy Framework of Make in Indiaद्ध

मेक इन इंडिया अभियान की सफलता के लिए भारत सरकार ने कई महत्वपूर्ण नीति सुधार ;च्वसपबल त्मवितउेद्ध किए हैं। सबसे पहले, थ्क् सुधार ;थ्वतमपहद क्पतमबज प्दअमेजउमदज तमवितउेद्ध के तहत कई क्षेत्रों में 100þ प्रत्यक्ष विदेशी निवेश ;थ्क्प्द्ध की अनुमति दी गई है। इसका उद्देश्य विदेशी पूंजी आकर्षित करना और भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करना है।

श्रम कानूनों में सुधार भी इस नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। निवेशकों के लिए प्रक्रियाओं को सरल बनाया गया है और औद्योगिक कार्यों के लिए आवश्यक अनुमतियाँ ऑनलाइन माध्यम से आसानी से प्राप्त की जा सकती हैं।

इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। इसके तहत औद्योगिक कॉरिडोर जैसे कृ दिल्ली–मुंबई औद्योगिक गलियारा ;क्डप्द्ध और अमृतसर–कोलकाता औद्योगिक गलियारा ;।ज्ञप्द्ध विकसित किए जा रहे हैं। इन परियोजनाओं से देश के विभिन्न राज्यों में उद्योगों के लिए बेहतर परिवहन, ऊर्जा और संचार सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं।

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के सहयोग से औद्योगिक प्रक्रियाओं को और अधिक पारदर्शी और डिजिटल बनाया गया है। सरकारी कार्यों और निवेश से जुड़ी औपचारिकताओं को ऑनलाइन कर दिया गया है, जिससे समय और श्रम दोनों की बचत होती है।

विदेशी निवेश में वृद्धि मेक इन इंडिया की एक बड़ी उपलब्धि रही है। वर्ष 2014 से 2024 के बीच भारत में थ्क्प् प्रवाह में लगभग 65þ की वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 2023दृ24 में भारत ने 83.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आकर्षित किया, जो भारतीय अर्थव्यवस्था में विश्वास और स्थिरता का प्रतीक है।

विनिर्माण क्षेत्र में वृद्धि भी उल्लेखनीय रही है। भारत का विनिर्माण क्षेत्र, जो पहले ळक्च् का लगभग 17þ था, वह 2024 तक 19.5þ तक पहुँच गया है। विशेष रूप से मोबाइल फोन निर्माण के क्षेत्र में भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश बन गया है, जिसमें लगभग 99þ घरेलू उत्पादन ही शामिल है।

रोजगार सृजन के क्षेत्र में भी मेक इन इंडिया अभियान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस योजना के तहत अब तक लगभग 2.3 करोड़ रोजगार सीधे या परोक्ष रूप से उत्पन्न हुए हैं। इससे न केवल आर्थिक विकास को बल मिला है, बल्कि ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़े हैं।

शोध विधि ;Research Methodologyद्ध

इस शोध में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दोनों तरीकों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए जानकारी सरकारी रिपोर्टों, आर्थिक सर्वेक्षणों, पुस्तकों, पत्रिकाओं और विश्वसनीय इंटरनेट स्रोतों से ली गई है।

शोध का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि भारत का व्यापार प्राचीन समय से लेकर आधुनिक युग तक कैसे बदला है, और आज "मेक इन इंडिया" तथा "आत्मनिर्भर भारत अभियान" ने देश को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने में क्या भूमिका निभाई है।

सभी तथ्यों का तुलनात्मक अध्ययन कर यह समझने का प्रयास किया गया है कि भारत की आत्मनिर्भरता की यह यात्रा केवल आर्थिक विकास की नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान और प्रगति की भी कहानी है।

निष्कर्ष

भारत की व्यापारिक यात्रा उसकी सभ्यता, संस्कृति और आत्मनिर्भरता की भावना से सदैव जुड़ी रही है। प्राचीन काल से ही भारत विश्व व्यापार का एक प्रमुख केंद्र रहा, जहाँ से कपास, मसाले, रेशम, रत्न, धातुएँ और औषधियाँ विदेशों में निर्यात की जाती थीं। इस समृद्ध व्यापार ने भारत को "सोने की चिड़िया" के रूप में प्रतिष्ठित किया।

मुग़ल और औपनिवेशिक काल में भारत के व्यापारिक ढाँचे में गहरे परिवर्तन आए। यूरोपीय शक्तियों के आगमन से स्वदेशी उद्योगों को भारी क्षति पहुँची और भारत की आर्थिक आत्मनिर्भरता कमजोर हुई। किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने अपने आर्थिक विकास के लिए पुनः स्वदेशी मूल्यों और आत्मनिर्भरता की ओर रुख किया।

इक्कीसवीं सदी में मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत अभियान जैसी योजनाओं ने उस ऐतिहासिक स्वावलंबन की भावना को आधुनिक तकनीक और औद्योगिक नीति से जोड़ने का कार्य किया है। मेक इन इंडिया पहल ने देश को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में उभरने की दिशा दी, जबकि आत्मनिर्भर भारत ने नवाचार, स्थानीय उत्पादन, कौशल विकास और तकनीकी आत्मनिर्भरता को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं।

सरकारी आँकड़ों के अनुसार, 2014 से 2024 के बीच प्रत्यक्ष विदेशी निवेश ;थ्क्द्ध में लगभग 65 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है, जो इस बात का संकेत है कि भारत वैश्विक निवेश और औद्योगिक विश्वास का केंद्र बन रहा है। इन पहलों ने न केवल उत्पादन और निर्यात को बढ़ावा दिया है, बल्कि रोजगार और उद्यमिता के नए अवसर भी उत्पन्न किए हैं।

स्पष्ट है कि भारत का व्यापारिक इतिहास कृ प्राचीन काल की समृद्धि से लेकर आधुनिक आत्मनिर्भरता तक कृ निरंतर विकास, नवाचार और आत्मविश्वास की कहानी है। यह यात्रा भारत की उस आर्थिक और सांस्कृतिक शक्ति को दर्शाती है जो समय के साथ और सशक्त होती जा रही है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारत का व्यापार और औद्योगिक विकास केवल आर्थिक प्रगति का नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता और वैश्विक नेतृत्व की ओर अग्रसरता का प्रतीक है। मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत अभियान ने इस दिशा में भारत को एक नई पहचान दी है कृ एक ऐसा भारत जो अपने इतिहास से प्रेरणा लेकर अपने भविष्य का निर्माण स्वयं कर रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची ;Referencesद्ध

1. गुप्त, सुरेन्द्रनाथ. (2023). सोने की चिड़िया और लुटेरे अंग्रेज ;नवीन संस्करणद्ध.
2. आनंद, एवं अनीश अरुण. (2025). सोने की चिड़िया. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. कुशवाहा, डॉ. जिमी सिंह. (2021). प्राचीन भारत में व्यापार. S- K- Book Agency.
4. पाण्डेय, डॉ. संजय कुमार. (2018). प्राचीन भारत में व्यापारिक मार्ग. कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी।
5. शर्मा, रामशरण. प्रारम्भिक भारत का आर्थिक और सामाजिक इतिहास. हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
6. शर्मा, घनश्याम दत. (2019). मध्यकालीन भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संस्थाएं. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
7. मिश्रा, डॉ. जे. पी. एवं सिंह, डॉ. सत्यपाल. (2020). भारत का विदेशी व्यापार. साहित्य भवन पब्लिकेशंस, आगरा।
8. गुप्ता, डॉ.देवेंद्र कुमार. (2012). प्राचीन भारत में व्यापार. कॉलेज बुक डिपो, जयपुर।
9. गौतम, राजेश कुमार. (2017). पूर्व मध्यकालीन व्यापार और व्यापार–प्रबंधन. मनीष प्रकाशन, वाराणसी।
10. चंद्र, विपिन. (2020). आधुनिक भारत. ओरिएंट ब्लैकस्वान।
11. श्रीवास्तव, बी. के., – वर्मा, एस. आर. (2024). आधुनिक भारत का सामाजिक–सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास (1700 ई.–1900 ई.)- SBPD Publishing House.
12. Srivastava, Richa- (2019)- Impact of ÞMake in Indiaß in Indian Economy- International Journal of Trend in Scientific Research and Development]
13. Government of India] Press Information Bureau- (2024] September 25)- 10 years of Make in India
14. Bishnoi] V- (2017)- Make in India initiative% A key for sustainable growth- Vidya International Journal of Management Research] 5(2)] 78–85- ISSN 2278&2559-
15. http%//www-makeinindia-com/article/&/v/make&in&india&embracing&growth&and&change
16. https%//www-mapsofindia-com/my&india/government/make&in&india&made&in&india&forming&the&backbone&of&indian&economy

17. https;//economictimes-indiatimes-com/news/economy/foreign&trade/oman&india&jv&to &raise&250&million&for&make&in&india&campaign
18. https://www-entrepreneur-com/article/313669
19. https://www-epw-in/journal/2019/12/special&articles/structural&change&forecasts&india-html
20. https://www-thehindu-com/opinion/lead/opinion&on&make&in&india&campaign/ article6736040-ece
21. https://www-livemint-com/news/india/what&is&atmanirbhar&bharat&heres&what&you& need&to&know&11588898242869-html
22. https://www-financialeÛpress-com/economy/what&is&atmanirbhar&bharat&package& how&it&works&and&benefits&to&indian&economy/1988975/
23. https://www-thehindu-com/business/Industry/what&is&atmanirbhar&bharat&package/ article31514987-ece
24. नीति आयोग. (2023) आत्मनिर्भर भारतः नीति एवं प्रभाव विश्लेषण रिपोर्ट. नई दिल्ली. https%//www-niti-gov-in
25. Ministry of Commerce & Industry- (2024)- Make in India Annual Report 2023–24. Government of India-https%//www-makeinindia-com
26. Reserve Bank of India (RBI)- (2024)- Foreign Direct Investment Statistics (2014–2024). https://rbi-org-in
27. Ministry of Micro] Small & Medium Enterprises (MSME)- (2023)- Annual Report 2022–23. Government of India.
28. https://msme-gov-inhttps%//www-thehindu-com/business/Industry/what&is&atmanirbhar& bharat&package/article31514987-ece.

❑❑❑